पाठ - राम लक्ष्मण परशुराम संवाद

शब्दार्थ

1. **नाथ संभुधनु भंजनिहारा ……. बिदित सकल संसार ||**

शब्दार्थ

- **संभु** – **शंभु** अथवा **शिव**
- **धनु** – धनुष
- **भंजनिहारा** – भंग करने वाला, तोड़ने वाला
- **होइहि** – ही होगा
- **केउ** – कोई
- **आयेसु** – आज्ञा
- **काह** – क्या
- **कहिअ** – कहते
- **किन** – क्यों नहीं
- **मोही** – मुझे
- **रिसाइ** – क्रोध करना
- **कोही** – क्रोधी
- **अरिकरनी** – शत्रु का काम
- **लराई** – लड़ाई
- **जेहि** – जिसने
- **तोरा** – तोड़ा
- **सहसबाहु** – सहस्त्रबाहु (हजार भुजाओं वाला)
- **सम** – समान
- **सो** – वह
- **रिपु** – शत्रु
- **बिलगाउ** – अलग होना
- **बिहाइ** – छोड़कर
- **जैहहिं** – जाएँगे
- **अवमाने** – अपमान करना
- **लरिकाईं** – बचपन में
- **कबहुँ** – कभी
- **असि** – ऐसा
- **रिस** – क्रोध
- **कीन्हि** – किया
- **गोसाईं** – स्वामी / महाराज
- **येहि** – इस
- **भृगुकुलकेतू** – भृगुकुल की पताका अर्थात् परशुराम
- **नृपबालक** – राजपुत्र / राजा का बेटा
- **त्रिपुरारि** – शिव जी
- **बिदित** – जानता है
- **सकल** – सारा

सन्दर्भ – इस काव्यांश में तुलसीदास जी ने उस वाक्य का वर्णन किया है जहाँ श्री राम के द्वारा शिव धनुष को तोड़ देने पर परशुराम जी क्रोधित हो जाते हैं। परशुराम जी इतने क्रोधित हो जाते हैं कि धनुष तोड़ने वाले को अपना शत्रु तक मान लेते हैं। परशुराम जी को इतना अधिक क्रोध करता देख कर अनजाने में ही लक्ष्मण जी उनका उपहास करने लगते हैं। जिस पर परशुराम जी और अधिक क्रोधित हो जाते हैं।

व्याख्या – श्री राम जी के द्वारा शिव धनुष तोड़े जाने के कारण जब परशुराम जी क्रोधित हो जाते हैं तब उन के क्रोध को देखकर जब जनक के दरबार में सभी लोग भयभीत हो गए तो श्री राम ने आगे बढ़कर परशुराम जी से कहा कि हे नाथ ! भगवान शिव के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई एक दास ही होगा। आप की क्या आज्ञा है , आप मुझसे क्यों नहीं कहते ? राम के वचन सुनकर क्रोधित परशुराम जी बोले – सेवक वह कहलाता है , जो सेवा का कार्य करता है। शत्रुता का

egyanarchive

काम करके तो लड़ाई ही मोल ली जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि आप किसी को कष्ट दे कर उसको खुशी नहीं दे सकते।

हे राम ! मेरी बात सुनो , जिसने भगवान शिव जी के इस धनुष को तोड़ा है , वह सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है। अर्थात जिसने भी भगवान् शिव के धनुष को तोड़ा है , उसकी चाहे हज़ार भुजाएँ हों वह फिर भी मेरा शत्रु है। फिर वो राजसभा की तरफ देखते हुए कहते हैं कि जिसने भी शिव धनुष तोड़ा है वह व्यक्ति खुद-बखुद इस समाज से अलग हो जाए , नहीं तो यहाँ उपस्थित सभी राजा मारे जाएँगे। परशुराम जी के इन क्रोधपूर्ण वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी मुस्कुराए और परशुराम जी का अपमान करते हुए बोले – हे गोसाईं (संत) ! बचपन में हमने ऐसे छोटे – छोटे बहुत से धनुष तोड़ डाले थे , किंतु ऐसा क्रोध तो कभी किसी ने नहीं किया , जिस प्रकार आप कर रहे हैं। इसी धनुष पर आपकी इतनी ममता क्यों है ? लक्ष्मण की व्यंग्य भरी बातें सुनकर परशुराम जी क्रोधित स्वर में बोले – अरे राजा के पुत्र ! मृत्यु के वश में होने से तुझे यह भी होश नहीं कि तू क्या बोल रहा है ? तू सँभल कर नहीं बोल पा रहा है। समस्त विश्व में विख्यात भगवान शिव का यह धनुष क्या तुझे बचपन में तोड़े हुए धनुषों के समान ही दिखाई देता है ?

सरलार्थ – इस चौपाई में परशुराम जी के क्रोध को दिखाया गया है। जो अपने आराध्य भगवान् शिव के धनुष के टूटने से अत्यंत दुखी हैं और धनुष को तोड़ने वाले को अपने शत्रु की तरह देख रहे हैं।

2. **लखन कहा हसि हमरे जाना …….. दलन परसु मोर अति घोर।।**

शब्दार्थ

- **हसि** – हँसकर
- **हमरे** – मेरे
- **सुनहु** – सुनो
- **छति** – क्षति / नुकसान
- **जून** – पुराना
- **तोरें** – तोड़ने में
- **भोरें** – धोखे में
- **छुअत टूट** – छूते ही टूट गया
- **रघुपतिहु** – राम का
- **दोसू** – दोष / गलती
- **बिनु** – बिना
- **काज** – कारण
- **रोसु** – क्रोध
- **चितै** – देखकर
- **परसु** – फरसा
- **सठ** – दुष्ट
- **सुनेहि** – सुना है
- **सुभाउ** – स्वभाव
- **बधौं** – वध करता हूँ
- **तोही** – तुझे
- **अति कोही** – बहुत अधिक क्रोधित
- **बिस्वबिदित** – दुनिया में प्रसिद्ध
- **द्रोही** – घोर क्षत्रु
- **भुजबल** – भुजाओं के बल से
- **कीन्ही** – कई बार
- **भूप** – राजा
- **बिपुल** – बहुत
- **महिदेवन्ह** – ब्राह्मणों को
- **छेदनिहारा** – काट डाला
- **बिलोकु** – देखकर

egyanarchive

- **महीपकुमारा** – राजकुमार
- **गर्भन्ह** – गर्भ के
- **अर्भक** – बच्चा
- **दलन** – कुचलने वाला
- **अति घोर** – अत्यधिक भयंकर

सन्दर्भ – इस काव्यांश में तुलसीदास वर्णन कर रहे हैं कि जब परशुराम जी को अत्यधिक क्रोध करता देख लक्ष्मण जी उनका और ज्यादा मजाक बनाने लगते हैं जिस कारण परशुराम जी इतने अधिक क्रोधित हो जाते हैं कि वे अपना परिचय अत्यधिक क्रोधी स्वभाव वाले व्यक्ति के रूप में देते हैं और बताते हैं कि वे पूरे विश्व में क्षत्रिय कुल के घोर शत्रु के रूप में प्रसिद्ध हैं।

व्याख्या – परशुराम जी का शिव धनुष की ओर इतना प्रेम देख कर और उसके टूट जाने पर अत्यधिक क्रोधित होते हुआ देख कर लक्ष्मण जी हँसकर परशुराम जी से बोले कि हे देव ! सुनिए , मेरी समझ के अनुसार तो सभी धनुष एक समान ही होते हैं ।

लक्ष्मण श्रीराम की ओर देखकर बोले कि इस धनुष के टूटने से क्या लाभ है तथा क्या हानि , यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। श्री राम जी ने तो इसे केवल छुआ था , लेकिन यह धनुष तो छूते ही टूट गया । फिर इसमें श्री राम जी का क्या दोष है ? मुनिवर ! आप तो बिना किसी कारण के क्रोध कर रहे हैं ? कहने का तात्पर्य यह है कि लक्ष्मण जी परशुराम जी के क्रोध को बेमतलब का मान रहे थे क्योंकि उन्हें नहीं पता था कि उस धनुष के साथ परशुराम जी के क्या भाव जुड़े थे। लक्ष्मण जी की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर परशुराम जी का क्रोध और बढ़ गया और वह अपने फरसे की ओर देखकर बोले कि अरे दुष्ट ! क्या तूने मेरे स्वभाव के विषय में नहीं सुना है ? मैं केवल बालक समझकर तुम्हारा वध नहीं कर रहा हूँ। अरे मूर्ख ! क्या तू मुझे केवल एक मुनि समझता है? मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति हूँ ।मैं पूरे विश्व में क्षत्रिय कुल के घोर शत्रु के रूप में प्रसिद्ध हूँ ।

मैंने अपनी इन्हीं भुजाओं के बल से पृथ्वी को कई बार राजाओं से रहित करके उसे ब्राह्मणों को दान में दे दिया था। हे राजकुमार ! मेरे इस फरसे को देख , जिससे मैंने सहस्रबाहु अर्थात हजारों लोगों की भुजाओं को काट डाला था ।

अरे राजा के बालक लक्ष्मण ! तू मुझसे भिड़कर अपने माता – पिता को चिंता में मत डाल अर्थात अपनी मौत को न बुला । मेरा फरसा बहुत भयंकर है । यह गर्भ में पल रहे बच्चों का भी नाश कर डालता है अर्थात मेरे फरसे की गर्जना सुनकर गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि परशुराम जी लक्ष्मण जी को समझाने का प्रयास कर रहे हैं कि उन्हें जब क्रोध आता है तो वे किसी बालक को भी मारने से नहीं हिचकिचाते।

सरलार्थ – इस चौपाई में परशुराम जी लक्ष्मण जी की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर अत्यधिक क्रोधित हो जाते हैं। किन्तु वे लक्ष्मण जी को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहते थे जिस कारण वे लक्ष्मण जी को अपने क्रोध का परिचय देते हुए कहते हैं कि उनका फरसा बहुत भयंकर है , जो गर्भ में पल रहे बच्चों का भी नाश कर डालता है। कहने का तात्पर्य यह है कि परशुराम जी केवल उस व्यक्ति को सजा देना चाहते थे जिसने उनके आराध्य शिव जी के धनुष को तोड़ा था। वे लक्ष्मण जी को बालक समझ कर केवल अपने क्रोध का परिचय देते हैं।

egyanarchive

3. **बिहसि लखनु बोले ……. बोले गिरा गंभीर ॥**

शब्दार्थ

- **बिहसि** – हँसकर
- **मृदु** – कोमल
- **बानी** – बोली , वाणी
- **मुनीसु** – महामुनि
- **महाभट** – महान् योद्धा
- **मानी** – मानना
- **पुनि पुनि** – बार बार
- **कुठारु** – फरसा / कुल्हाड़ा
- **पहारू** – पहाड़
- **इहाँ** – यहाँ
- **कुम्हड़बतिआ** – सीताफल / कुमड़ा का छोटा फल
- **तरजनी** – अँगूठे के पास की अंगुलि
- **सरासन** – धनुष
- **बाना** – बाण
- **भृगुसुत** – भृगुवंशी
- **सहौं** – सहन करना
- **सुर** – देवता
- **महिसुर** – ब्राह्मण
- **हरिजन** – ईश्वर भक्त
- **अरु** – और
- **गाईं** – गाय
- **सुराई** – वीरता दिखाना
- **बधें** – वध करने से , मारने से
- **अपकीरति** – अपयश
- **मारतहू** – मार दो
- **पा** – पैर
- **परिअ** – पड़ना
- **कोटि** – करोड़
- **कुलिस** – वज्र / कठोर
- **कहेउँ** – कह दिया हो
- **छमहु** – क्षमा करना
- **धीर** – धैर्यवान
- **सरोष** – क्रोध में भरकर
- **गिरा** – वाणी

egyanarchive

सन्दर्भ – इस काव्यांश में परशुराम जी के क्रोधित वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी द्वारा अत्यंत कोमल वाणी में हँसकर उनको प्रत्युत्तर देते हुए कहते हैं कि वे उनको भृगुवंशी समझकर और आपके कंधे पर जनेऊ देखकर अपने क्रोध को सहन कर रहे हैं। उनका तो एक – एक वचन ही करोड़ों वज्रों के समान कठोर है। उन्होंने व्यर्थ में ही फरसा और धनुष धारण किया हुआ है। इन वचनों को सुनकर परशुराम जी और अधिक क्रोधित हो जाते हैं।

व्याख्या – परशुराम जी के क्रोध से भरे वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी बहुत ही अधिक कोमल वाणी में हँसकर उनसे बोले कि हे मुनिवर ! आप तो अपने आप को बहुत बड़ा योद्धा समझते हैं और बार–बार मुझे अपना फरसा दिखाते हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि आप फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं , परंतु हे मुनिवर ! यहाँ पर कोई भी सीता फल अर्थात कुम्हड़े के छोटे फल के समान नहीं हैं , जो तर्जनी उँगली को देखते ही मर जाएँ। (यहाँ लक्ष्मण जी ने, तर्जनी उँगली को देखते ही मर जाएँ , ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि परशुराम जी ने क्रोध में अपनी तर्जनी उँगली दिखा कर कहा था कि अगर वह व्यक्ति सभा से अलग नहीं हो जाता अर्थात उनके सामने नहीं आ जाता जिसने उनके आराध्य शिव जी का धनुष तोड़ा है तो वे वहाँ सभा में उपस्थित सभी राजाओं का वध कर देंगे।)

मुनि जी ! मैंने आपके हाथ में फरसा और धनुष – बाण देखकर ही अभिमानपूर्वक आपसे कुछ कहा था। कहने का तात्पर्य यह है कि एक क्षत्रिय ही दूसरे क्षत्रिय से अभिमान पूर्वक कुछ कह सकता है। जनेऊ से तो आप एक भृगुवंशी ब्राह्मण जान पड़ते हैं इन्हें देखकर ही , जो कुछ भी आपने कहा उसे सहन कर अपने क्रोध को रोक रहा हूँ। हमारे कुल की यह परंपरा है कि हम देवता , ब्राह्मण , भगवान के भक्त और गाय , इन सभी पर वीरता नहीं दिखाया करते , क्योंकि इन्हें मारने से पाप लगता है और इनसे हार जाने पर अपकीर्ति अथवा अपयश (बदनामी) होता है । इसीलिए आप मारें तो भी , हमें आपके पैर पकड़ने चाहिए। हे महामुनि ! आपका तो एक–एक वचन ही करोड़ों वज्रों के समान कठोर है। आपने व्यर्थ में ही फरसा और धनुष–बाण धारण किया हुआ है।

आपके धनुष बाण और कुठार (फरसे) को देखकर अगर मैंने कुछ अनुचित कह दिया हो तो हे मुनिवर ! आप मुझे क्षमा कीजिए। लक्ष्मण के यह व्यंग्य – वचन सुनकर भृगुवंशी परशुराम क्रोध में आकर गंभीर स्वर में बोलने लगे।

सरलार्थ – परशुराम जी को अत्यधिक क्रोधित हो कर अपने क्रोधित व्यवहार के बारे में बताते हुए देख कर लक्ष्मण जी इनका और अधिक अपमान करने लगे और उनके बताए तर्कों का खंडन करने लगे। लक्ष्मण जी के ऐसा करने के कारण परशुराम जी और अधिक क्रोधित हो गए।

4. कौसिक सुनहु मंद येहु बालकु …… रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥

शब्दार्थ

- **कौसिक** – विश्वामित्र
- **सुनहु** – सुनिए
- **मंद** – मुर्ख , कुबुद्धि
- **येहु** – यह
- **कुटिलु** – दुष्ट
- **कालबस** – मृत्यु के वशीभूत
- **घालकु** – घातक
- **भानुबंस** – सूर्यवंशी
- **राकेस कलंकू** – चंद्रमा का कलंक
- **निपट** – पूरी तरह
- **निरंकुसु** – जिस पर किसी का वश न चले
- **अबुधु** – नासमझ
- **असंकू** – शंकारहित
- **कालकवलु** – काल का ग्रसित / मृत
- **छन माहीं** – क्षण भर में
- **खोरि** – दोष
- **हटकहु** – रोको
- **उबारा** – बचाना
- **सुजसु** – सुयश / सुकीर्ति
- **अछत** – आपके रहते हुए
- **बरनै** – वर्णन
- **पारा** – दुसरा
- **करनी** – काम
- **बरनी** – वर्णन किया
- **दुसह** – असह्य
- **बीरब्रती** – वीरता का व्रत धारण करने वाला
- **अछोभा** – क्षोभरहित
- **गारी** – गाली
- **सूर** – शूरवीर
- **समर** – युद्ध
- **रन** – युद्ध
- **कथहिं प्रतापु** – प्रताप की डींग मारना

egyanarchive

सन्दर्भ – इन चौपाइयों में लक्ष्मण जी की व्यंग भरी बातों को सुन कर परशुराम जी विश्वामित्र जी को उन्हें समझाने को कहते है और साथ – ही – साथ यह भी कहते हैं कि अगर लक्ष्मण जी चुप नहीं हुए तो इसके परिणाम का दोष उन्हें न दिया जाए। परन्तु लक्ष्मण जी इसके बावजूद भी परशुराम जी पर व्यंग्य कसते जाते हैं।

व्याख्या – लक्ष्मण जी की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर परशुराम जी को और क्रोध आ गया और वह विश्वामित्र से बोले कि हे विश्वामित्र ! यह बालक (लक्ष्मण) बहुत कुबुद्धि और कुटिल लगता है। और यह काल (मृत्यु) के वश में होकर अपने ही कुल का घातक बन रहा है। यह सूर्यवंशी बालक चंद्रमा पर लगे हुए कलंक के समान है। यह बालक मूर्ख , उदंण्ड, निडर है और इसे भविष्य का भान तक नहीं है।

अभी यह क्षणभर में काल का ग्रास हो जाएगा अर्थात् मैं क्षणभर में इसे मार डालूँगा। मैं अभी से यह बात कह रहा हूँ , बाद में मुझे दोष मत दीजिएगा। यदि तुम इस बालक को बचाना चाहते हो तो , इसे मेरे प्रताप , बल और क्रोध के बारे में बता कर अधिक बोलने से मना कर दीजिए।

लक्ष्मण जी इतने पर भी नहीं माने और परशुराम को क्रोध दिलाते हुए बोले कि हे मुनिवर ! आपका सुयश आपके रहते हुए दूसरा कौन वर्णन कर सकता है ? आप तो अपने ही मुँह से अपनी करनी और अपने विषय में अनेक बार अनेक प्रकार से वर्णन कर चुके हैं।

यदि इतना सब कुछ कहने के बाद भी आपको संतोष नहीं हुआ हो , तो कुछ और कह दीजिए। अपने क्रोध को रोककर असह्य दुःख को सहन मत कीजिए। आप वीरता का व्रत धारण करने वाले , धैर्यवान और क्षोभरहित हैं , आपको गाली देना शोभा नहीं देता।

जो शूरवीर होते हैं वे व्यर्थ में अपनी बड़ाई नहीं करते , बल्कि युद्ध भूमि में अपनी वीरता को सिद्ध करते हैं। शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर भी अपने प्रताप की व्यर्थ बातें करने वाला कायर ही हो सकता है। अर्थात युद्ध में अपने शत्रु को सामने देखकर अपनी झूठी प्रशंसा तो कायर करते हैं।

सरलार्थ – लक्ष्मण जी जब परशुराम जी का अपमान किए जा रहे थे तब परशुराम जी ने लक्ष्मण जी को शांत करवाने के लिए विश्वामित्र जी को कहा , क्योंकि परशुराम जी नहीं चाहते थे कि वे क्रोध में कुछ अनर्थ कर दें। किन्तु लक्ष्मण जी परशुराम जी पर व्यंग्य करते जा रहे थे। इस चौपाई से हमें यह भी ज्ञात होता है कि परशुराम जी का क्रोधित व्यवहार सम्पूर्ण संसार में विख्यात था किन्तु लक्ष्मण जी इससे अनजान थे और वे अनजाने में ही परशुराम जी के साथ ऐसा व्यवहार कर रहे थे।

5. तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा ..... अजहुँ न बूझ अबूझ ॥

शब्दार्थ

- **कालु** – काल / मृत्यु
- **हाँक** – आवाज़ लगाना
- **जनु** – जैसे
- **लावा** – लगाना
- **सुधारि** – सुधारकर
- **कर** – हाथ
- **देइ** – देना
- **दोसु** – दोष

egyanarchive

- **कटुबादी** – कड़वे वचन बोलने वाला
- **बधजोगू** – मारने योग्य, वध के योग्य
- **बाँचा** – बचाया
- **मरनिहार** – मरने वाला
- **साँचा** – सच में ही
- **छमिअ** – क्षमा करना
- **गनहिं** – गिनना
- **खर** – दुष्ट
- **अकरुन** – जिसमें दया और करुणा न हो
- **कोही** – क्रोधी
- **गुरहि** – गुरु के
- **उरिन** – ऋण से मुक्त
- **श्रमथोरे** – थोड़े परिश्रम से
- **गाधिसूनु** – गाधि के पुत्र अर्थात् विश्वामित्र
- **हरियरे** – हरा ही हरा
- **अयमय** – लोहे की बनी हुई
- **खाँड़** – तलवार
- **ऊखमय** – गन्ने से बनी हुई
- **अजहुँ** – अब भी

सन्दर्भ – इस चौपाई में तुलसीदास जी वर्णन कर रहे हैं कि जब लक्ष्मण जी परशुराम जी के क्रोध से नहीं डर रहे थे तो परशुराम जी सभी से कहते हैं कि अभी तक वे लक्ष्मण जी को बालक समझ कर माफ कर रहे थे , परन्तु अब वे और सहन नहीं कर सकते। अब कोई उन्हें दोष न दें। परशुराम जी के ऐसे वचन सुनकर विश्वामित्र जी मन ही मन परशुराम जी का अज्ञानियों की तरह व्यवहार देख कर हँसने लगे।

व्याख्या – लक्ष्मण जी परशुराम जी के वचनों को सुनकर उन से बोले कि ऐसा लग रहा है मानो आप तो काल (यमराज) को आवाज लगाकर बार-बार मेरे लिए बुला रहे हो। लक्ष्मण जी के ऐसे कठोर वचन सुनते ही परशुराम जी का क्रोध और बढ़ गया। उन्होंने अपने भयानक फरसे को घुमाकर अपने हाथ में ले लिया और बोले अब मुझे कोई दोष नहीं देना। इतने कड़वे वचन बोलने वाला यह बालक मारे जाने योग्य है। बालक देखकर इसे मैंने बहुत बचाया , लेकिन लगता है कि अब इसकी मृत्यु निकट आ गई है।

परशुराम जी को क्रोधित होते देखकर विश्वामित्र जी बोले हे मुनिवर ! आप इसके अपराध को क्षमा कर दीजिए क्योंकि साधु लोग तो बालकों के गुण और दोष की गिनती नहीं करते हैं। तब परशुराम जी ने क्रोधित होते हुए कहा मै दयारहित और क्रोधी हूँ कि ये मेरा दुष्ट फरसा है , मैं स्वयं दयारहित और क्रोधी हूँ , उस पर यह गुरुद्रोही मेरे सामने .....

उत्तर दे रहा हैं फिर भी मैं इसे बिना मारे छोड़ रहा हूँ। हे विश्वामित्र ! सिर्फ तुम्हारे प्रेम के कारण। नहीं तो इसे इस कठोर फरसे से काटकर थोड़े ही परिश्रम से गुरु के ऋण से मुक्त हो जाता।

परशुराम जी के वचन सुनकर विश्वामित्र जी ने मन ही मन में हँसकर सोचा कि मुनि परशुराम जी को हरा – ही – हरा सूझ रहा है अर्थात् चारों ओर विजयी होने के कारण ये राम और लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं। मुनि अब भी नहीं समझ रहे हैं कि ये दोनों बालक लोहे की बनी हुई तलवार हैं , गन्ने के रस की नहीं , जो मुँह में लेते ही गल जाएँ अर्थात् राम–लक्ष्मण सामान्य वीर न होकर बहुत पराक्रमी योद्धा हैं। परशुराम जी अभी भी इनकी साहस , वीरता व क्षमता से अनभिज्ञ हैं।

egyanarchive

सरलार्थ – इस चौपाई से हमें पता चलता है कि लक्ष्मण जी निडर स्वभाव के हैं और परशुराम जी जो आज तक सभी क्षत्रियों पर विजयी रहे हैं , वे राम–लक्ष्मण को भी एक साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं। जिस कारण विश्वामित्र जी उनकी अज्ञानता पर मन ही मन हँस रहे हैं।

6. **कहेउ लखन मुनि सीलु …….. बचन बोले रघुकुलभानु ॥**

शब्दार्थ

- **सीलु** – शील स्वभाव
- **बिदित** – पता है
- **उरिन** – ऋणमुक्त
- **भये** – हो गए
- **नीकें** – भली प्रकार
- **गुररिनु** – गुरु का ऋण
- **हमरेहि** – मेरे ही
- **ब्यवहरिआ** – हिसाब लगाने वाले को
- **बिप्र** – ब्राह्मण
- **सुभट** – बड़े – बड़े योद्धा
- **द्विजदेवता** – ब्राह्मण
- **सयनहि** – आँख के इशारे से
- **नेवारे** – मना किया
- **कृसानु** – अग्नि
- **रघुकुलभानु** – रघुवंश के सूर्य श्रीरामचंद्र

सन्दर्भ – इस चौपाई में तुलसीदास जी वर्णन कर रहे हैं कि जब लक्ष्मण जी किसी भी तरह परशुराम जी के अपमान करने से पीछे नहीं हट रहे थे और परशुराम जी को अत्यधिक क्रोध आ रहा था तब श्री राम जी ने लक्ष्मण जी के वचनों के विपरीत शांत वचनों से परशुराम जी से लक्ष्मण जी को क्षमा करने की विनती करने लगे।

व्याख्या – परशुराम जी के क्रोध से पूर्ण वचनों को सुन कर लक्ष्मण जी ने परशुराम जी से कहा कि हे मुनिश्रेष्ठ ! आपके पराक्रम को कौन नहीं जानता। वह सारे संसार में प्रसिद्ध है। आपने अपने माता पिता का ऋण तो चुका ही दिया हैं और अब अपने गुरु का ऋण चुकाने की सोच रहे हैं। जिसका आपके जी पर बड़ा बोझ है। और अब आप ये बात भी मेरे माथे डालना चाहते हैं। बहुत दिन बीत गये। इसीलिए उस ऋण में ब्याज बहुत बढ़ गया होगा। बेहतर है कि आप किसी हिसाब करने वाले को बुला लीजिए। मैं आपका ऋण चुकाने के लिए तुरंत थैली खोल दूंगा। लक्ष्मण जी के कड़ुवे वचन सुनकर परशुराम जी ने अपना फरसा उठाया और लक्ष्मण जी पर आघात करने को दौड़ पड़े । सारी सभा हाय – हाय पुकारने लगी। इस पर लक्ष्मण जी बोले हे मुनिश्रेष्ठ ! आप मुझे बार बार फरसा दिखा रहे हैं। हे क्षत्रिय राजाओं के शत्रु ! मैं आपको ब्राह्मण समझ कर बार – बार बचा रहा हूँ। मुझे लगता है आपको कभी युद्ध के मैदान में वीर योद्धा नहीं मिले हैं। हे ब्राह्मण देवता ! आप घर में ही अपनी वीरता के कारण फूले – फूले फिर रहे हैं अर्थात् अत्यधिक खुश हो रहे हैं। लक्ष्मण जी के ऐसे वचन सुनकर सभा में उपस्थित सभी लोग यह अनुचित है , यह अनुचित है ‘ कहकर पुकारने लगे। यह देखकर श्री राम जी ने लक्ष्मण जी को आँखों के इशारे से रोक दिया।

लक्ष्मण जी के **उत्तर** परशुराम जी की क्रोधाग्नि में आहुति के सदृश कार्य कर रहे थे। इस क्रोधाग्नि को बढ़ते देख रघुवंशी सूर्य राम , लक्ष्मण जी के वचनों के विपरीत , जल के समान शांत करने वाले वचनों का प्रयोग करते हुए परशुराम जी से लक्ष्मण को क्षमा करने की विनती करने लगे। लक्ष्मण जी के उत्तरों ने , परशुराम जी के क्रोध रूपी अग्नि में आहुति का

egyanarchive

काम किया। जिससे उनका क्रोध अत्यधिक बढ़ गया। जब श्री राम ने देखा कि परशुराम जी का क्रोध अत्यधिक बढ़ चुका है। अग्नि को शांत करने के लिए जैसे जल की आवश्यकता होती हैं। वैसे ही क्रोध रूपी अग्नि को शांत करने के लिए मीठे वचनों की आवश्यकता होती हैं। श्री राम ने भी वही किया। श्री राम ने अपने मीठे वचनों से परशुराम जी का क्रोध शांत करने का प्रयास किया।

सरलार्थ – लक्ष्मण जी के प्रत्येक **उत्तर** परशुराम जी की क्रोधाग्नि में आहुति के कार्य कर रहे थे। जब श्री राम जी ने ये सब देखा कि परशुराम जी का क्रोध अत्यधिक बढ़ चुका है। तब अग्नि को शांत करने के लिए जैसे जल की आवश्यकता होती हैं। वैसे ही परशुराम जी की क्रोध रूपी अग्नि को शांत करने के लिए श्री राम जी ने मीठे वचनों से परशुराम जी का क्रोध शांत करने का प्रयास किया। भाव यह है कि जितने क्रोधित स्वभाव के लक्ष्मण जी थे उसके बिलकुल विपरीत श्री राम का स्वभाव अत्यंत शांत था।

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

उत्तर- कवि ने 'श्री ब्रजदूलह' ब्रज-दुलारे कृष्ण के लिए प्रयुक्त किया है। वे सारे संसार में सबसे सुंदर, सजीले, उज्ज्वल और महिमावान हैं। जैसे मंदिर में 'दीपक' सबसे उजला और प्रकाशवान होता है। उसके होने से मंदिर में प्रकाश फैल जाता है। उसी प्रकार कृष्ण की उपस्थिति से ही सारे ब्रज-प्रदेश में आनंद, उत्सव और प्रकाश फैल जाता है। इसी कारण उन्हें संसार रूपी मंदिर का दीपक कहा गया है।

प्रश्न 2. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- परशुराम के क्रोध करने पर राम ने अत्यंत विनम्र शब्दों में–धनुष तोड़ने वाला आपका कोई दास ही होगा' कहकर परशुराम का क्रोध शांत करने एवं उन्हें सच्चाई से अवगत कराने का प्रयास किया। उनके मन में बड़ों के प्रति श्रद्धा एवं आदर भाव था। उनके शीतल जल के समान वचन परशुराम की क्रोधाग्नि को शांत कर देते हैं।

लक्ष्मण का चरित्र श्रीराम के चरित्र के बिलकुल विपरीत था। उनका स्वभाव उग्र एवं उद्दंड था। वे परशुराम को उत्तेजित एवं क्रोधित करने का कोई अवसर नहीं छोड़ते थे। उनकी व्यंग्यात्मकता से परशुराम आहत हो उठते हैं और उन्हें मारने के लिए उद्यत हो जाते हैं जो सभा में उपस्थित लोगों को भी अनुचित लगता है।

प्रश्न 3. लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।

उत्तर- इसमें ब्रज-दुलारे, नटवर-नरेश, कलाप्रेमी कृष्ण की सुंदर रूप-छवि प्रस्तुत की गई है। उनका रूप मनमोहक है। साँवले शरीर पर पीले वस्त्र और गले में वनमाला है। पाँवों में पाजेब और कमर में घुँगरूदार आभूषण हैं। उनकी चाल संगीतमय है।

egyanarchive

- अनुप्रास की छटा देखते ही बनती है। शब्द पायल की तरह झनकते प्रतीत होते हैं। यथा
- पाँयनि नूपुर मंजु बजें' में आनुप्रासिकता है। इसका नाद-सौंदर्य दर्शनीय है।।
- 'कटि किंकिनि कै धुनि की' में 'क' ध्वनि और 'न' की झनकार मिल गए-से प्रतीत होते हैं।
- 'पट पीत' और 'हिये हुलसै बनमाल' में भी अनुप्रास है।
- 'भाषा' कोमल, मधुर और संगीतमय है। सवैया छंद का माधुर्य मन को प्रभावित करता है।

प्रश्न 4. परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा, निम्न पद्यांश के आधार पर लिखिए

बाल ब्रह्मचारी अति कोही बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ।।
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा॥
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ॥

उत्तर- परशुराम ने अपने बारे में कहा कि मैं बचपन से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता आया हूँ। मेरा स्वभाव अत्यंत क्रोधी है। मैं क्षत्रियों का विनाश करने वाला हूँ, यह सारा संसार जानता है। मैंने अपनी भुजाओं के बल पर पृथ्वी को अनेक बार जीतकर ब्राह्मणों को दे दिया। सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाले इस फरसे के भय से गर्भवती स्त्रियों के गर्भ तक गिर जाते हैं। इसी फरसे से मैं तुम्हारा वध कर सकता हूँ।

प्रश्न 5. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं?

उत्तर- इस पंक्ति का भाव है-स्वयं सवेरा वसंत रूपी शिशु को जगाने के लिए गुलाब रूपी चुटकी बजाती है। आशय यह है कि वसंत ऋतु में प्रात:काल गुलाब के फूल खिल उठते हैं।

egyanarchive

प्रश्न 6. साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर- यह पूर्णतया सत्य है कि साहस और शक्ति के साथ विनम्रता का मेल हो तो सोने पर सोहागा होने जैसी स्थिति हो जाती है। अन्यथा विनम्रता के अभाव में व्यक्ति उद्दंड हो जाता है। वह अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हुए दूसरों का अहित करने लगता है। साहस और शक्ति के साथ विनम्रता का मेल श्रीराम में है जो स्वयं को 'दास' शब्द से संबोधित करके प्रभावित करते हैं। वे अपनी विनम्रता के कारण परशुराम की क्रोधाग्नि को शीतल जल रूपी वचन के छीटें मारकर शांत कर देते हैं।

प्रश्न 7.

भाव स्पष्ट कीजिए

(क) बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन पूँकि पहारू।

(ख) इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं ।।
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।

(ग) गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ ।।

उत्तर- कवि कहना चाहता है कि राधिका की सुंदरता और उज्ज्वलता अपरंपार है। स्वयं चाँद भी उसके सामने इतना तुच्छ और छोटा है कि वह उसकी परछाईं-सा है। इसमें व्यतिरेक अलंकार है। व्यतिरेक में उपमान को उपमेय के सामने बहुत हीन और तुच्छ दिखाया जाता है।

प्रश्न 8. पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा सौंदर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

उत्तर- तुलसी की भाषा सरल, सरस, सहज और अत्यंत लोकप्रिय भाषा है। वे रस सिद्ध और अलंकार प्रिय कवि हैं। उन्हें अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं पर समान अधिकार है। रामचरितमानस की अवधी भाषा तो इतनी लोकप्रिय है कि वह जन-जन की कंठहार बनी हुई है। इसमें चौपाई छंदों के प्रयोग से गेयता और संगीतात्मकता बढ़ गई है। इसके अलावा उन्होंने दोहा, सोरठा, छंदों का भी प्रयोग किया है। उन्होंने भाषा को कंठहार बनाने के लिए कोमल शब्दों के प्रयोग पर बल दिया है तथा वर्गों में बदलाव किया है; जैसे

- का छति लाभु जून धनु तोरें ।
- गुरुहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे

तुलसी के काव्य में वीर रस एवं हास्य रस की सहज अभिव्यक्ति हुई है; जैसे

बालकु बोलि बधौं नहि तोहीं। केवल मुनिजड़ जानहि मोही।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाही। जे तरजनी देखि मर जाही।।

अलंकार – तुलसी अलंकार प्रिय कवि हैं। उनके काव्य में अनुप्रास, उपमा, रूपक जैसे अलंकारों की छटा देखते ही बनती है; जैसे

अनुप्रास – बालकु बोलि बधौं नहिं तोही।

उपमा – कोटि कुलिस सम वचन तुम्हारा।

रूपक – भानुवंश राकेश कलंकू। निपट निरंकुश अबुध अशंकू।।

उत्प्रेक्षा – तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा।।

egyanarchive

वक्रोक्ति – अहो मुनीसु महाभट मानी।

यमक – अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहु न बूझ, अबूझ

पुनरुक्ति प्रकाश – पुनि-पुनि मोह देखाव कुठारू।

इस तरह तुलसी की भाषा भावों की तरह भाषा की दृष्टि से भी उत्तम है।

प्रश्न 9. इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है। उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पठित कविताओं के आधार पर कवि देव की निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती हैं-

(क) देव दरबारी कवि थे। उन्होंने अपने आश्रयदाताओं, उनके परिवारजनों तथा दरबारी समाज को प्रसन्न करने के लिए जगमगाते हुए सुंदर चित्रण किए। उन्होंने जीवन के दुखों के नहीं, अपितु वैभव-विलास और सौंदर्य के चित्र खींचे। उनके सवैये में कृष्ण का दूल्हा-रूप है तो कविताओं में वसंत और चाँदनी को भी राजसी वैभव-विलास से भरा-पूरा दिखाया गया है।

(ख) देव में कल्पना-शक्ति का विलास देखने को मिलता है। वे नई-नई कल्पनाएँ करते हैं। वृक्षों को पालना, पत्तों को बिछौना, फूलों को झिंगूला, वसंत को बालक, चाँदनी रात को आकाश में बना 'सुधा-मंदिर' आदि कहना उनकी उर्वर कल्पना शक्ति का परिचायक है।

(ग) देव ने सवैया और कवित्त छंदों का प्रयोग किया है। ये दोनों ही छंद वर्णिक हैं। छंद की कसौटी पर देव खरे उतरते हैं।

(घ) देव की भाषा संगीत, प्रवाह और लय की दृष्टि से बहुत मनोरम है।

(ङ) देव अनुप्रास, उपमा, रूपक आदि अलंकारों का सहज स्वाभाविक प्रयोग करते हैं।

(च) उनकी भाषा में कोमल और मधुर शब्दावली का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 10. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचानकर लिखिए

(क) बालकु बोलि बधौं नहि तोही।

(ख) कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा।

(ग) तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। ।
बार बार मोहि लागि बोलावा ॥

(घ) लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु॥

उत्तर-

(क) 'ब' वर्ण की आवृत्ति के कारण **अनुप्रास अलंकार।**

(ख) कोटि-कुलिस – **उपमा अलंकार।**
कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा। – **उपमा अलंकार।**

(ग) तुम्ह तौ काल हाँक जनु लावा – **उत्प्रेक्षा अलंकार।**

egyanarchive

बार-बार मोहि लाग बोलावा – **पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।**

(घ) लखन उतर आहुति सरिस, जल सम वचन – **उपमा अलंकार।**

भृगुवर कोप कृसानु – **रूपक अलंकार।**

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 11. "सामाजिक जीवन में क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरे के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों की चिर-निवृत्ति का उपाय ही न कर सके।" आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि क्रोध हमेशा नकारात्मक भाव लिए नहीं होता बल्कि कभी- कभी सकारात्मक भी होता है। इसके पक्ष य विपक्ष में अपना मत प्रकट कीजिए।

उत्तर- क्रोध के सकारात्मक और नकारात्मक रूपों पर छात्र स्वयं चर्चा करें।

प्रश्न 12. संकलित अंश में राम का व्यवहार विनयपूर्ण और संपन्न है, लक्ष्मण लगातार व्यंग्य बाणों का उपयोग करते हैं और परशुराम का व्यवहार क्रोध से भरा हुआ है। आप अपने आपको इस परिस्थिति में रखकर लिखें कि आपका व्यवहार कैसा होता?

उत्तर- राम, लक्ष्मण और परशुराम जैसी परिस्थितियाँ होने पर मैं राम और लक्ष्मण के मध्य का व्यवहार करूंगा। मैं श्रीराम जैसा नम्र-विनम्र हो नहीं सकता और लक्ष्मण जितनी उग्रता भी न करूंगा। मैं परशुराम को वस्तुस्थिति से अवगत कराकर उनकी बातों का साहस से भरपूर जवाब देगा परंतु उनका उपहास न करूंगा।

प्रश्न 13. अपने किसी परिचित या मित्र के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- छात्र अपने परिचित या मित्र की विशेषताएँ स्वयं लिखें।

egyanarchive

प्रश्न 14. दूसरों की क्षमताओं को कम नहीं समझना चाहिए-इस शीर्षक को ध्यान में रखते हुए एक कहानी लिखिए।

उत्तर- वन में बरगद का घना-सा पेड़ था। उसकी छाया में मधुमक्खियों ने छत्ता बना रखा था। उस पेड़ पर एक कबूतर भी रहता था। वह अक्सर मधुमक्खियों को नीचा, हीन और तुच्छ प्राणी समझकर सदा उनकी उपेक्षा किया करता था। उसकी बातों से एक मधुमक्खी तो रोनी-सी सूरत बना लेती थी और कबूतर से जान बचाती फिरती। वह मधुमक्खियों को बेकार का प्राणी मानता था। एक दिन एक शिकारी दोपहर में उसी पेड़ के नीचे आराम करने के लिए रुका। पेड़ पर बैठे कबूतर को देखकर उसके मुँह में पानी आ गया। वह धनुषबाण उठाकर कबूतर पर निशाना लगाकर बाण चलाने वाला ही था कि एक मधुमक्खी ने उसकी बाजू पर डंक मार दिया। शिकारी का तीर कबूतर के पास से दूर निकल गया। उसने बाजू पकड़कर बैठे शिकारी को देखकर बाकी का अनुमान लगा लिया। उस मधुमक्खी के छत्ते में लौटते ही उसने सबसे पहले सारी मधुमक्खियों से क्षमा माँगी और भविष्य में किसी की क्षमता को कम न समझने की कसम खाई। अब कबूतर उन मधुमक्खियों का मित्र बन चुका था।

प्रश्न 15. उन घटनाओं को याद करके लिखिए जब आपने अन्याय का प्रतिकार किया हो।

उत्तर- एक बार मेरे अध्यापक ने गणित में एक ही सवाल के लिए मुझे तीन अंक तथा किसी अन्य छात्र को पाँच अंक दे दिया। ऐसा उन्होंने तीन प्रश्नों में कर दिया था जिससे मैं कक्षा में तीसरे स्थान पर खिसक रहा था। यह बात मैंने अपने पिता जी को बताई। उन्होंने प्रधानाचार्य से मिलकर कापियों का पुनर्मूल्यांकन कराया और मैं कक्षा में संयुक्त रूप से प्रथम आ गया।

प्रश्न 16. अवधी भाषा आज किन-किन क्षेत्रों में बोली जाती है?

उत्तर- अवधी भाषा कानपुर से पूरब चलते ही उन्नाव के कुछ भागों लखनऊ, फैज़ाबाद, बाराबंकी, प्रतापगढ़, सुलतानपुर, जौनपुर, मिर्जापुर, वाराणसी, इलाहाबाद तथा आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है।

egyanarchive